आधुनिक हिन्दी कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना

शिखा उमराव,

शोध छात्रा,
ज्वाला देवी विद्या मंन्दिर पी0जी0 कालेज,
कानपुर

कहानी हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा हैं। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ 20वीं सदी में हुआ। हिन्दी साहित्य की रंजनात्मक विधाओं में कहानी का स्थान सशक्त एवं महत्वपूर्ण हैं। कहानी अपने लघु कलेवर में सम्पूर्ण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवेश के परिवर्तित रूप को चित्रित करने वाली लोकप्रिय विधा हैं। पिछले एक सदी में हिन्दी में कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आंचलिकता, मध्यवर्ग चेतना आदि के दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। कहानी बदलते हुए समय और समाज के साथ चलते हुये निरंतर अपने को नये रूप रंग में ढालती रही हैं। समकालीन कहानी का यही दृष्टिकोण कहानी आन्दोलनों की संकीर्णताओं से मुक्त करके निखरा रूप प्रदान करता हैं। कुछ विद्वानों ने इसे कहानी आन्दोलन से सम्बन्ध कर रेखाकिंत करने का प्रयास किया लेकिन नये भाव बोध, शैली शिल्प, कथ्य और भाषा के नये तेवर से इसे अलग बनाये रखा। कहानी विधा में कई आन्दोलन चले जैसे – नयी कहानी, समान्तर कहानी, सचेतन कहानी, जनवादी कहानी आदि। कथानक के विकास की नाटकीय योजनाओं जैसी आधुनिक कहानी में मिलती हैं। पुरानी कहानियों में उसका अभाव दिखता हैं। कलापूर्ण उतार चढ़ाव कहानी के कथानक में आज देखा जा सकता है वैसा प्राचीन काल की कहानियों में देखना सम्भव नहीं था। प्राचीन कहानी का अन्त सुखान्त होता था वही आधुनिक कहानी यथार्थपूर्ण हैं। अतः वह सुखान्त कम दुखान्त अधिक होती हैं। अतः आधुनिक कहानी साहित्य का वह विकसित कलात्मक रूप है जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से कम पात्रों अथवा चरित्रों के द्वारा कम से कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से मनोवाछिंत कथानक, चरित्र, वातावरण,दृश्य के सहारे अथवा प्रभाव की सृष्टि करता हैं। आज आधुनिक कहानियों में सामाजिक आदर्श का रूप बदल गया है पूर्वकालीन कहानियों मे आदर्शवाद का सम्बन्ध कल्पना से था लेकिन आधुनिक काल की कहानियों का सम्बन्ध यथार्थता से हो गया हैं।

आज हम जिस समाज या जिस काल में अपना जीवन व्यतीत कर रहे है वह वस्तुतः ऐसा समाज है जहां मध्यवर्ग प्रत्येक समाज की समस्या बना हुआ हैं। प्रत्येक मानव अपनी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं से घिरा हुआ हैं। मध्यवर्ग की स्थिति को आधुनिक कहानीकारों ने अपनी कहानियों का माध्यम बनाया जो संवेदनशील बन पड़ी हैं। इस वर्ग की अन्तिम गंभीर समस्या को ही आधुनिक कहानी की आवधारणा भूमण्डलीयकरण, वैश्वीकरण और वैज्ञानिक विकास रहा है जिसमे सामाजिक परिवेश में आर्थिक विषमता नयी और पुरानी पीढ़ी में मूल्य संघर्ष पारिवारिक सम्बन्धों में बिखराव, युवा में नवीन मूल्य संघर्ष, भय निराशा, अकेलापन और मध्यवर्गीय चेतना आदि चित्रित कर अपने आधुनिक होने के अर्थ को स्पष्ट करती हैं।

आधुनिक काल की समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित करने वाले प्रमुख कहानीकारों

में संजय, उदय प्रकाश, मनू भण्डारी, मालती जोशी, अवधेश प्रीति, मदन मोहन, गोविन्द मिश्र, गंगा प्रसाद विमल, शिवमूर्ति, ज्ञान विवेक, ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया, राजी सेठ, सूर्यबाला मंजुल भगत, चित्रा मुदकल आदि लेखिकाओं का योगदान रहा। यह कहानियां विकसित युग के परिवर्तन को चित्रित करने की आवश्यकता की सहज परिणति हैं। आधुनिक काल की कहानियों में समाज के मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीड़ा को बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से अपनी कहानियों में संजोया हैं।

मध्यवर्गीय परिवार पर पाश्चात्य संस्कृति का बड़ा गहरा प्रभाव आज दिखाई पड़ता हैं। बोलते समय आज इस वर्ग के बहुत से लोग अंग्रेजी के शब्द वाक्य या वाक्यांशों का प्रयोग करते हैं। ऐसा करने से वे लोग अपने शिक्षित होने का परिचय देना चाहते हैं। मध्यवर्गीय परिवार में ऐसी बहुत सी छोटी – छोटी समस्याएं है जो छोटी होकर भी बहुत बड़ी समस्याओं का रूप धारण कर लेती है।

ज्ञानरंजन की कहानियां चेकोश्लोवाकिया की नही अपने देश के मध्यवर्गीय घर, परिवार पिता – पुत्र, पति –पत्नी, भाई –बहन आदि रिश्तों के बीच घटित होती कहानियां हैं। इस दृष्टि से लेखक चार कहानियां 'शेष होते हए' 'पिता 'सम्बन्ध फेंस के इधर – उधर में मध्यवर्गीय समस्याओं का अवलोकन किया जा सकता हैं शेष होते हुए कहानी में संयुक्त परिवार का बिखराव साफ साफ देखा जा सकता हैं। मध्यवर्गीय परिवारों में गौर वर्ण एवं श्याम वर्ण के लोगो के प्रति व्यवहार में भी अंतर देखने को मिलता हैं। इस वर्ग के लोग गौर वर्ण को अधिक महत्व देते हैं तभी तो शेष होते हुए कहानी में अम्मा "मझले को घूरती हुयी कहती है कितने काले होते जा रहे हो तुम शीतल से भी ज्यादा जब पैदा हुए थे तब गेंहुआ रंग था तेरा" मध्यवर्ग की यह प्रवृत्ति आज मीडिया पर भी हावी है।

रविन्द्र कालिया ने भी अपनी कहानियों में मुख्य रूप से महानगर में रहने वाले मध्यवर्गीय चेतना को संजीवता से उकेरा है उनकी कहानियों में भी मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं को देखा जा सकता है। भटका हुआ वर्ग शराब, सिगरेट और सेक्स को ही जीवन की परिणति मान बैठा है। नौ साल छोटी पत्नी का पति अपनी पत्नी के विवाहपूर्व सम्बन्ध को बड़ी सहजता से लेता है।

ममता कालिया के 'बड़े दिन की पूर्व सांझ' 'वे तीन' और वह जिन्दगी सात घण्टे बाद की बीमारी छुटकारा अपत्नी जैसी कहानियों में मध्यवर्गीय परिवारिक संवेदनशून्यतः का चित्रण इन कहानियों की विशिष्टता है।

दूधनाथ सिंह अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय निराशा, कुंठा और बेचैनी को कभी सीधे–सीधे उठाते हैं तो कभी प्रतीकों फैन्टेसी और स्वप्नकथाओं के माध्यम से चित्रित करते हैं। "शिनाख्त और रीछ का मूल्यांकन करे तो इनकी कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना के विविध रूप अनेक यथार्थपूर्ण समस्याओं को देखा जा सकता है। महेन्द्र भल्ला की कहानी 'एक पत्नी के नोटस' में रिश्ते आधुनिकता का लिबास पहनकर अपना अलग–अलग रूप धारण करते हैं। प्रेम विवाह किया, विवाह के उपरान्त भी निजी रिश्तों में बहुत खुश है किसी से किसी भी प्रकार का कोई गिला शिकवा नहीं है परन्तु धीरे–धीरे कहानी में एक नया मोड़ आता है और पत्नी–पत्नी के बीच का रिश्ता अपनी चरम पर आता है और रिश्तों में खिचाव आने लगता है। इस तरह से आधुनिक कहानी में पति–पत्नी के बदलते रिश्तों पर भी अत्यधिक कहानियाँ लिखी जा रही है। गंगा प्रसाद बिमल, रमेश बक्शी, राजकमल चौधरी, जगदीश चतुर्वेदी ने भी प्रमाणित अनुभव को कहानी में उतारा है।

आधुनिकता के सीमित भौतिक आधारों का विकास अंग्रेजों के द्वारा भारत में किया गया इन भौतिक आधारों पर भी अधिकारों अंग्रेजों का ही

था। लेकिन क्या आधुनिकता के सामाजिक आधार का भी निर्माण और विकास अंग्रेजों के आगमन के साथ या बाद में हुआ था। इस सवाल के जवाब के मूल्य में भारतीय मध्यवर्ग का आरंभिक इतिहास छिपा है क्योंकि मध्यवर्ग आधुनिकता का उत्पाद दोनों ही मध्यवर्ग केवल भारतीय समस्या नहीं है अपितु यह पूरे यूरोप की समस्या बनी हुयी है पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के व्यापारिक पूंजीपतियों ने जनसाधारण की शिक्षा के नाम पर ऐसे विद्यालायों की स्थापना की जो उनकी बढ़ती भौगोलिक और व्यापारिक जरूरतों की पूर्ति कर सकने में सामर्थ हो सके।

मध्यवर्गीय लोगों की जिन्दगी कोल्हू के बैल के समान है जिस प्रकार बैल अपनी सीमा में ही घूमता रहता है या कह लें कि कोल्हू के इर्द गिर्द ही रहता है, उसी प्रकार मध्यवर्गीय लोग वस्तुतः अपनी छांटी सी सीमा में ही बंधे रहते हैं। सीमा को तोड़ने का प्रयास करते है किन्तु उसे तोड़ पाने में असमर्थ रहते। उनका सपना पूरा नहीं हो पाता मंहगाई, बेराजगारी, मुद्रास्फुर्ति आदि बिगड़ती आर्थिक स्थिति को सुधारने के मध्यवर्ग संघर्षरत है।

सामान्य तौर पर मध्यवर्गीय जीवन निम्न एवं उच्च वर्ग के बीच की कड़ी प्रतीत होती दिखाई देती है। परन्तु यह सामाजिक वर्ग लगातार आन्तरिक संघर्ष में लगा रहता है। डा0 विवेकी राय के शब्दों में,"स्वतंत्रता पूर्व का मध्यवर्ग उच्च वर्ग पर मरता रहा परन्तु स्वतंत्रतायोत्तर मध्यवर्ग प्रतिष्ठा, मान सम्मान, कुलरीति एवं सामाजिक प्रशंसा आदि सें मुक्त सीमित आय के विषय दुश्चक्र में अपने को समेट कर जीवन रक्षा मात्र का अभिलाषी है।" इस वर्ग की नारियाँ अधिक प्रतिभाशाली व प्रभावशाली है। क्योंकि किसी भी विकट परिस्थिति का सामना करती है और उसे मुँह तोड़ जवाब देने में सक्षम हैं। उच्च वर्ग एवं मध्यवर्ग की तरह आधुनिक जीवन की सुख–सुविधाओं को जो सामाजिक वर्ग नहीं भोग पाता उसे निम्न वर्ग कहा जाता है।

अमरकान्त की प्रतिनिधि कहानियों में मध्यवर्ग, विशेषकर, निम्नवर्ग की जीवानुभवों का जीवित मानवीय चित्रण मिलता है। डिप्टी कलेक्टर कहानी में आजादी के पश्चात् मध्य वर्ग में महत्वाकांक्षाओं और अंतर्विरोधी का अर्थपूर्ण चित्रण हुआ है मध्यवर्ग के राकलदीप बाबू अपने लड़के को डिप्टी कलेक्टर बनाना चाहते हैं इसके लिये वह प्रतिदिन शिवजी के मन्दिर में जाते हैं वहाँ भगवान से उसके लिये प्रार्थना करते है। नारायन की प्रत्येक इच्छा व सुख सुविधाओं का ख्याल रखते है।

इसी प्रकार दोपहर का भोजन कहानी में आर्थिक परिस्थिति से परिवार में भोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। परिवार दो वक्त की रोटी जुटाने में अपना पूरा दिन रात लगा देता है।

धर्मवीर भारती के मरीज नम्बर सात, मुर्दो का गाँव, धुआं आदि कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना को बाखूबी देखा जा सकता है। मुर्दों का गाँव में भूख के कारण जुलाहा अपनी पत्नी को घर से निकाल देता है कुछ काम करते वक्त उसका अंगूठा कट कर गिर जाता है। मालिक की मर्मरता पर प्रहार है। मरीज नं0 सात में मरीज की व्यथा स्पष्ट है। धुआं कहानी में वैश्याओं का चित्रण किया गया। लेखक कहता है, "जनसमूह पाप करे तो वह पाप नहीं रह जाता। पाप की स्थिति व्यक्ति मात्र में है। बंद गली का आखिरी मकान में कहानीकार ने बहुत से मध्यवर्गीय व्यक्तियों के संघर्ष की महागाथा की कहानी मुंशी जी के माध्यम से अंकित करने का सफल प्रयास किया है।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी कहानी आज के परिवेश के इर्द–गिर्द घटित होते जीवन के स्वाभाविक क्रिया कलापों को चित्रण करने का वह सशक्त माध्यम

प्रतिबन्धित हो रहा है मध्यवर्गीय जीवन की दुरूहता, जीवन की स्वाभाविकता, गतिशीलता उनके कार्यालयी क्रिया कलाप सम्बन्धी मध्यवर्गीय चेतना को वास्तव में इन आधुनिक कहानियों में प्रमुख रूप से विस्तारता प्रदान की गयी है।

सन्दर्भ सूची

- हिन्दी कहानियॉ एक आलोचनात्मक अध्ययन, डा0 श्री कृष्णलाल (पृष्ठ–29)
- नयी कहानी और माध्यम वर्गीय जीवन, डा0 कमलेश्वर प्रसाद सिंह (पृष्ठ–229)
- समकालीन हिन्दी कहानी, डा0 पुष्पलाल सिंह साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष, डा0 ओकारनाथ श्रीवास्तव (पृष्ठ–169)
- साहित्य का उद्देश्य प्रेमचन्द्र, (पृष्ठ–63)
- मधुरेषः नयी कहानी पुर्नविचार, ज्ञानरंजन : पिता कहानी
- प्रेमचन्द्र परम्परा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण (पृष्ठ–203)
- रवीन्द्र कालिया : प्रतिनिधि कहानियां
- धर्मवीर भारती : प्रतिनिधि कहानियां
- प्रबंध परिमल, लेखक डा0 प्रकाश दीक्षित, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा (पृष्ठ–102)
- हिन्दी गद्य साहित्य पर समजवाद का प्रभाव, डा0 शंकर दयाल जायसवाल (पृष्ठ–221)
- पुष्पला सिंह समकालीन कहानी : युगबांध का संदर्भ (पृष्ठ–23)